International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सामाजिक इतिहास लेखन : दशा एवं दिशा

शर्मिला यादव
शोध छात्रा, इतिहास विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध आलेख सारः प्राचीन काल से ही भारतीय इतिहास में इतिहास लेखन की विधा चली आ रही है। इतिहास के अर्न्तगत हम इतिहास लेखन से सम्बधित अनेक शाखाओ का अध्ययन करते है इन्ही में से एक शाखा सामाजिक इतिहास लेखन की है। वेसै सामाजिक इतिहास एक बड़ा ही दुर्लभ विषय है, सामाजिक इतिहास हमेशा से ही अवहेलना का पात्र रहा है। क्योंकि प्राचीन काल में राजनीतिक इतिहास लिखने के बाद बची–कुची जगह पर सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक इतिहास लिख दिया जाता था परन्तु 20वीं शताब्दी में आकर इतिहासकारों का ध्यान सामाजिक इतिहास की तरफ उभर कर सामने आया। इस शोध पत्र में हम सामाजिक इतिहास लेखन के बारे प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहासकारों के विचारों का अध्ययन करेगे और साथ ही सामाजिक इतिहास लेखन कि वर्तमान दशा एवं दिशा के बारे में जानने का प्रयास करेंगे।

मूलशब्द– इतिहास, इतिहास लेखन, अनाल दृष्टिकोण, मार्क्सवादी सोच, सामाजिक इतिहास, संपूर्ण इतिहास, सूक्ष्म इतिहास

इतिहास एवं सामाजिक इतिहास लेखन :

मानव सभ्यता व चेतना के विकास के साथ ही इतिहास का क्षितिज भी लगातार विस्तार की तरफ बढ़ रहा है। इससे इतिहास में नये–नये आयाम जुड़ते जा रहे है। इनके कारण इतिहास लेखन में चुनौतियाँ भी निरंतर बढ़ती जा रही है। अगर हम इतिहास की बात करे तो इतिहास अतीत के अध्ययन से संबधित है तो इतिहास लेखन अतीत की व्याख्या के अध्ययन से संबधित है। इस प्रकार –

दुर्भाग्य से सामाजिक इतिहास भारत में आज भी अवहेलना का पात्र बना हुआ है और इसे प्रायः सामाजिक सुधार आन्दोलनों के समकक्ष माना जाता है। वर्गों की संरचना एवं वर्ग चेतना पर कार्य अभी आरम्भ ही हो रहा है। देसी भाषाओं में साहित्य का विकास स्पष्टतः आधुनिक भारतीय इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, किन्तु अभी तक इसके संकेत नहीं है कि ये बातें वैज्ञानिक, ऐतिहासिक अथवा समाजशास्त्रीय गवेषणा का विषय बनी हो। फिर भी अधिकाशंतः

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

*षोधार्थी, इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विष्वविद्यालय, रोहतक

निरक्षर लोगों के देश में लिखित साहित्य देश के केवल एक अल्पसंख्यक भाग के विचारों एवं मूल्यों का ही सूचक हो सकता है। हाल ही में एक फ्रांसीसी इतिहासकार ने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया है कि, ''ग्रामीण लोगों के गीतों, नृत्यों, कहावतों, कथाओं एवं चित्रों का भी अध्ययन किया जाए ताकि कृषकों के मन को समझा जा सके।''[1]

सामाजिक इतिहास की शुरूआत कुछ दशक पहले ही हुई है जिस में मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक इतिहास की आधारशिला ही समाज है। सामाजिक इतिहास इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण शाखा मानी जाती है। इसका क्षेत्र भी व्यापक है। सामाजिक इतिहास के अन्तर्गत मानव के व्यवहार, पारिवारिक जीवन, रीति–रिवाजों, रहन–सहन, परंपराओं, मनोरंजन के साधनों इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक इतिहास के द्वारा वर्तमान में उत्पन्न सामाजिक समस्याओं को आसानी से समझा जा सकता है।

फ्रांस में 20वीं शताब्दी के मध्य में एक अधिक मूलगामी प्रयास किया गया जिस के द्वारा राजनैतिक इतिहास को ऐतिहासिक अध्ययन के केन्द्र से हटा दिया गया। समाज में मनुष्य के अधिक समग्र तथा समृद्धि इतिहास की दिशा में जिन दो इतिहासकारों ने ठोस कदम उठाया वे थे लूसियन फेब्रे और मार्क ब्लोख। हेनरी बेर (1863–1934) ने उनसे पहले रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल सिथेसिस (1900) नामक शोध पत्रिका की स्थापना कर दी थी और उन्होंने सौ खण्डों में इवॉल्यूशन ऑफ ह्यूमेनिटी की योजना बनाई थी जिसका उद्देश्य समाज में मनुष्य की सभी गतिविधियों का एक व्यापक संश्लेषण प्रस्तुत करना था। इस महान परियोजना के अन्तर्गत समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों की पद्धतियों तथा अन्तर्दृष्टियों को अपनाया जाना था।[2]

सामाजिक इतिहास का अभिप्राय :

'सामाजिक इतिहास' से तात्पर्य एक नए तरफ के 'संपूर्ण इतिहास' से है जो मानव अतीत के सभी आयामों को अधिकाधिक पूर्णता के साथ इतिहास के पृष्ठों में उतारने के लिए प्रयत्नशील है। यह इतिहास को 'महान' व्यक्तियों के क्रियाकलापों के वर्णन तक ही सीमित रखना नहीं चाहता, बल्कि आम आदमी का इतिहास भी लिखना चाहता है।[3] सम्पूर्ण इतिहास मात्र इतिहास के कुछ

प्रमुख घटनाओं पर ही अपने अध्ययन को केन्द्रित नहीं करना चाहता, अपितु दिन प्रतिदिन की प्रत्येक बात का इतिहास बनाना चाहता है। सम्पूर्ण समाज की मानसिकता, दिनचर्या, आपसी सम्बन्ध आदि का समग्र अध्ययन करना चाहता है। वह सम्पूर्ण समाज को इतिहास में लाना चाहता है।[4]

अतीत के सामाजिक इतिहास सर्वेक्षण से पता चलता है कि इसके बेहतरीन विद्वानों को हमेशा इसके नाम से परेशानी रही है या तो उन्होंने अपने आपको केवल इतिहासकार कहा और अपना लक्ष्य 'संपूर्ण' या 'भूमंडलीय' इतिहास लिखना तय किया। ऐसा ही उन महान फ्रांसीसियों ने किया था जिनसे हमें इतना कुछ मिलता है या फिर, तमाम प्रासंगिक समाज विज्ञानों को इतिहास में ही समाहित करना चाहा बजाए इस के कि इतिहास को किसी एक का उदाहरण बना दिया जाए। मार्क ब्लाख, फर्नान्द, ब्रादेल, जार्ज लफेव्र जैसे इतिहासकारों को इसी अर्थ में सामाजिक इतिहासकार कहा जा सकता है कि उन्होंने फुस्ते द कूलाजं के इस कथन को स्वीकार किया : ''इतिहास अतीत में घटित सभी तरह की घटनाओं का जमा जोड़ मात्र नहीं है। यह मानव समाजों का विज्ञान है।''[5]

यह सच है कि एक मायने में 'संपूर्ण' इतिहास कभी लिखा जा ही नहीं सकता, क्योंकि अतीत के सभी तथ्य कभी इतिहास की पुस्तकों में समा नहीं पाएंगे। परन्तु जब हम सामाजिक इतिहास का अभिप्राय 'संपूर्ण' इतिहास से लगाते है तो इसका अर्थ अतीत के सभी तथ्यों को समेट लेने से नहीं है बल्कि, समाज के सभी आयामों पर समग्र दृष्टि रखने से है। यह समग्रता दो कारणों से महत्त्वपूर्ण है – पहले तो इतिहास को नयी रोचकता और गहराई देने के लिए तथा दूसरे, इतिहास का संतुलित नजरिया बनाने के उद्देश्य से भी। जब हम ऐतिहासिक वर्णन में किसी पहलू को नजरअंदाज करते है तो अपने वर्णन को अपूर्ण ही नहीं छोड़ देते बल्कि, कई बार जाने–माने पहलुओं को ही कारण और परिणाम की व्याख्या में घसीट कर सैद्धान्तिक गलतियाँ भी कर सकते है।[6]

शायद यही कारण है कि फ्रांस में 'अनाल्स' (Annales) परम्परा के नाम से तथा अमेरिका में 'नया इतिहास' (New History) के नाम से एव ब्रिटेन में 'सामाजिक इतिहास' (Social History) के नाम से शुरू किए गए सभी प्रयोगों का मुख्य उद्देश्य एवं विशेषता अन्य असमानताओं के बावजूद ऐसी ही सम्पूर्ण इतिहास की रचना की रही है। इन विवाद परक ऐतिहासिक प्रयोगों पर इतिहास के विद्यार्थी का ध्यान जाना जरूरी है, जिससे कि वह समाज के सही इतिहास (True History) का ज्ञान प्राप्त कर सके।[7]

आधुनिक भारत के इतिहास लेखन में इस प्रयोग को आम तौर पर 'सामाजिक इतिहास' का ही नाम दिया गया है। परन्तु इसकी स्वतंत्र व्याख्या से पहले सामाजिक इतिहास के अपने जन्म और वृद्धि के इतिहास पर एक नजर डाल लेना शायद उचित होगा।[8]

राजनीतिक चक्र पर ही मुख्यतः केन्द्रित रहने वाले इतिहास लेखन के प्रति गंभीर इतिहासकारों को अंसतोष हमेशा से रहा है। इस सुलभ दायरे के बाहर आकर, आम आदमी के हालातों के बारे में लिखने की कोशिश, हेरादोतस से लेकर गिबन्स तक कई विख्यात इतिहासकारों के ग्रन्थों में यदा–कदा देखने को मिलती है। परन्तु इन भूतपूर्व इतिहासकारों ने अकसर 'सांस्कृति विशेषताएँ' अथवा 'सामाजिक जीवन' जैसे नामों से कुछ अलग–थलग अध्याय अपने ग्रन्थों के अन्त में इतिहास की पूँछ की तरह जोड़कर अपने लेखन को संपूर्णता प्रदान करने का ही सीमित प्रयास किया। राजनीतिक घटनाओं, सत्ता संघर्षो एवं प्रशासनिक परिवर्तनों की व्याख्या के बाद बची– खुची सामाजिक / सांस्कृतिक जीवन की व्याख्या की। इन चेष्टाओं में अन्य कमजोरी यह थी कि, इन अंतिम अध्यायों में काल्पनिक साहित्य तथा मिथकों एवं किवदंतियों को प्रामाणिक तथ्यों से पृथक करने का प्रयास वाछंनीय ढ़ंग से पूरा नहीं किया गया।[9] इससे वास्तविक इतिहास छूट जाता है और शासक वर्ग का इतिहास तो पहले लिखा जाता था परन्तु शासित वर्ग छूट जाता था। इसी कारण सामाजिक इतिहास लेखन की परम्परा को बढ़ावा मिला।

उल्लेखनीय है कि इतिहास के सामान्य अध्ययन से हमें इतिहास का वास्तविक ज्ञान नहीं मिलेगा। हमें इतिहास इतिहास के वास्तविक ज्ञान के लिए इतिहास के सूक्ष्म अध्ययन (Micro Study of History) करना होगा। अतीत का सूक्ष्म अध्ययन माइक्रो हिस्ट्री का मुख्य उद्देश्य है। इतिहास के इस सूक्ष्म ज्ञान के लिए अनेक ऐतिहासिक विवाद भी खड़े हो गये है। इतिहास का कोई भी अंग हो, उसके सूक्ष्म अध्ययन से इतिहास का सम्यक ज्ञान होता है।[10]

वृहत इतिहास का एक अन्य रूप मार्क्सवादी इतिहासकारों द्वारा भी बताया गया है। जैसे कार्ल मार्क्स ने वर्ग सम्बन्धों और समाज की उत्पादन पद्धति की तरह ध्यान आकृष्ट कराया। मार्क्सवादी इतिहासकारों ने जहाँ एक ओर आर्थिक इतिहास की तरफ ध्यान दिया वही दूसरी तरफ समाज के विभिन्न बदलते स्वरुपों और शोषित वर्गों के आन्दोलनों पर ध्यान देते हुए समाज का इतिहास लिखने की चेष्ठा की।

ब्रिटेन के ई०जे० हॉब्सबॉम तथा क्रिस्टोफर हिल एवं फ्रांस के जॉर्ज लेफब्रे तथा जॉर्ज ड्यूबी इत्यादि ने इस परंपरा के प्रमुख कर्णधार रहे है। आधुनिक भारत के संदर्भ में किसानों, मजदूरों और

कबीलों के संघर्षों का इतिहास आज ए०आर० देसाई कैथलिन गफ, कुमार सुरेश सिंह तथा दीपेश चक्रवर्ती जैसे इतिहासकारों द्वारा लिखा जा रहा है।[11]

ब्रिटेन के मार्क्सवादी सोच के इतिहासकार ई०जे० हाब्सवॉम, ई०पी० थामसन और हिल्टन आदि ने सम्पूर्ण इतिहास की एक अलग ही धारा विकसित की। उनकी इस धारा में सामाजिक इतिहास के लेखन में जहाँ वर्ग–सम्बन्ध, शोषण, प्रभुत्व तथा विरोध जैसे सांस्कृतिक आयामों को समझने का प्रयास किया गया है। वहीं सांस्कृतिक मानसिकताओं, दैनिक जीवन क्रमों को भी लेखन में ढालने का प्रयास किया गया। समाज के सम्पूर्ण इतिहास लेखन में उनकी धुरी मार्क्सवादी सोच पर घूमती है।[12] सुमित सरकार, और शाहिद अमीन ने औपनिवेशिक आधुनिक भारत के इतिहास को सम्पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया है। हमने उपरोक्त यह देखा कि सामाजिक इतिहास लिखने की जरूरत क्यों पड़ी और कैसे सूक्ष्म इतिहास और मार्क्सवादी सोच और सम्पूर्ण इतिहास से ही धीरे–धीरे सामाजिक इतिहास की तरफ इतिहासकारों का झुकाव हुआ। अब हम सामाजिक इतिहास और इतिहासकारों के बारे में जानना चाहेगें।

सामाजिक इतिहास लेखन की प्रारम्भिक अवस्था :

सर्वप्रथम सामाजिक इतिहास पर ध्यान जर्मन विद्वान रीह और फ्रेटांग गया इन्होंने मध्यकालीन व आधुनिक जर्मनी के सामाजिक जीवन और रीति–रिवाजों का वर्णन किया। वैसे देखा जायें तो सामाजिक इतिहास को लोकप्रिय बनाने का पूरा श्रेय ट्रैवेलियन को जाता है।

अंग्रेजी इतिहासकार जी०एम० ट्रैवेलियन का कहना है कि राजनीतिक और आर्थिक इतिहास के बीच सामाजिक इतिहास सेतु का काम करता है और उन्हें प्रभावित करता है – ''सामाजिक इतिहास के अभाव में आर्थिक इतिहास मरूस्थल तथा राजनीतिक इतिहास अवर्णनीय है।''[13] क्योंकि आर्थिक इतिहास में हम समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन करते है तो राजनीतिक संस्थाओं संस्थाओं या संगठनों की स्थापना भी समाज के लिए ही होती है। इसलिए इन दोनों से सामाजिक इतिहास को अलग नहीं किया जा सकता।

रेनियर के अनुसार, ''सामाजिक इतिहास आर्थिक इतिहास की पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक इतिहास की कसौटी है।'' कोन्ते के अनुसार इतिहास सामाजिक भौतिक शास्त्र है। इसके अन्तर्गत मानवीय व्यवहार के सामान्य नियमों का अध्ययन किया जाता है। सन्देह नहीं कि इतिहास का निर्माण सामाजिक अणु तत्वों से होता है। सामाजिक इतिहास का अध्ययन बड़ा ही रोचक है। इसके

आाम बड़े सूक्ष्म एवं विस्तृत है। सामाजिक इतिहास की पूर्णता तब ही संभव है, जब इसमें समाज के सभी वर्गों की इतिवृत्ति आये।[14]

अंग्रेजी जनजीवन के अधिकांश पक्षों का एली हार्वे द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट चित्रण 'दी इंग्लिश पीपल इन' 1815 सामाजिक इतिहास में एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रयास है। आर०एच० टाउने, सिडनी और बिएट्रिस वेब, आइलीन पॉवर और एच०एन० ब्रेल्सफोर्ड के लेखनों ने इतिहास की इस शाखा की निरंतर अक्षुण्ण अस्मिता को आकार दिया। जी०डी०एच० कोल और रेमंड पोस्टगेट की कृति 'द कॉमन पीपल' (1938) इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है तथा ई०पी० थॉमसन की पुस्तक 'द मेकिंग ऑफ दी इग्लिश वर्किंग क्लास' इस सरोकार की सबसे मुखर अभिव्यक्तियों में से एक है। इन लेखकों की कृतिया मूलतः निम्न वर्गो की स्थिति और गतिविधियों पर केन्द्रित है। इन से अलग ढंग से इस मुद्दे पर विचार करते हुए ट्रैवेलियन की पुस्तक 'इंग्लिश सोशल हिस्ट्री' (1944) अत्यन्त लोकप्रिय हुई। ''राजनीति को अलग रख कर लिखे गए लोगों के इतिहास'' के रूप में ट्रेवेलियन द्वारा अपने विषय के वर्णन ने काफी गलतफहमी को जन्म दिया और कुछ लोगों को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि उनकी पुस्तक 'अतीत के बारे में एक भद्रतापूर्ण बातचीत' है।[15]

किन्तु यह पुस्तक स्वयं ऐसी नहीं है जैसाकि इसे 'अतीत के बारे में विनम्र बातचीत' कहकर कुछ लोगों ने इसके प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण का परिचय दिया है; वस्तुतः यह चाउसर से रानी विक्टोरिया तक अंग्रेजी समाज के चरणबद्ध विकस का एक जीवंत सर्वेक्षण है।[16]

जी०एम० ट्रेवेलियन ने सामाजिक इतिहास को अपनी सुन्दर शैली द्वारा काफी लोकप्रिय बनाया और इसे अपने ढ़ंग से परिभाषित करते हुए कहा कि राजनीति के बाद जो इतिहास में शेष रह जाता है, वही सामाजिक इतिहास है। यह परिभाषा इतिहास में काफी विवादास्पद रही है और इसके विरुद्ध दो महत्त्वपूर्ण आपत्तियाँ उठाई गई है : (1) क्या अतीत के वर्णन में राजनीति को शेष पहलुओं से इतनी सरलता से पृथक किया जा सकता है ? (2) क्या राजनीति के अलावा बाकी सब जानकारी एक ही बंडल में यों बेतरतीब बांध देने से ऐतिहासिक व्याख्या में सहायता मिल सकेगी ?[17]

यद्यपि इस तरह के इतिहास लेखन में जनसंस्कृति और सामाजिक असमानता दोनों की सम्मिलित व्याख्या हुई है। परन्तु समय के साथ इतिहास लेखन के इस मोड की कुछ सीमाएं भी स्पष्ट होने लगी है। जहाँ एक ओर इस धारा के अनेकानेक लेखों में संस्कृति के एक ही तरह के विरोधाभासों एवं तनावों को अपेक्षित ढ़ंग से प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई है वही, दूसरी ओर, सामाजिक इतिहास की यह परियोजना कोई व्यापक ऐतिहासिक संश्लेषण आज तक प्रस्तुत

नहीं कर पाई है। स्वभावतः नये इतिहासकार अकसर व्यापकता की ओर बढ़ने की बजाय अपने परिप्रेक्ष्य को ओर छोटे से छोटा करते रहे है। इससे एक विद्वान की खोजों को दूसरे की जानकारी से संबद्ध करना मुश्किल होता जा रहा है। परिणामस्वरुप इस धारा का इतिहास लेखन छिन्न–भिन्न जानकारी के रूप में ही हमारे सामने आ रहा है।[18]

इस सूक्ष्म घटना–केन्द्रित शोध के बचाव में किया गया यह तर्क शायद इतिहास के सभी छात्रों को आश्वस्त नहीं कर पाएगा कि फ्रांस की तरह हिन्दुस्तान के इतिहासकारों के पास व्यापक इतिहास लिखने के लिए सामग्री एवं स्त्रोतों का अभाव है। वास्तव में आधुनिक काल के इतिहास के लिए स्त्रोतों का अभाव शायद उतनी बड़ी समस्या नहीं है। जितनी कि उनका रचनात्मक उपयोग। दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में भी आधुनिक भारत का व्यापक इतिहास लिखा जा सकता है। यह बात पार्था चटर्जी, क्रिस बेली तथा प्रो० सुमित सरकार के कुछ महत्त्वपूर्ण लेख पर्याप्त रूप में प्रमाणित करते है। आधुनिक भारत के इतिहासकारों के लिए यह शायद विचारणीय प्रश्न है कि जब प्राचीन काल के इतिहासकार भी अतीत की संस्कृति, रोजमर्रा के हालातों, रहन–सहन इत्यादि पर प्रकाश डाल सकते है। तो आधुनिक काल के इतिहास को इस व्यापक दृष्टिकोण से 'स्त्रोतों के अभाव' के कारण क्यों वंचित रखा जाए।[19]

उल्लेखनीय है कि हमारे देश में सामाजिक इतिहास लेखन के स्त्रोतों का अभाव नहीं है, पर लेखन दृष्टि का अभाव अवश्य है। किसी भी काल के सामाजिक इतिहास का लेखन, उस काल के समग्र आकंलन पर ही लिखा जा सकता है, अन्यथा वह आधा –अधूरा रह जायेगा। सामाजिक इतिहास लेखन पूर्वाग्रह से परे सूक्ष्म परक दृष्टि से होना चाहिए।[20]

सामाजिक इतिहास के सूक्ष्म लेखन के पक्ष में यह जरूर कहा जा सकता है कि इसकी प्रणाली सम्बन्धी अपनी समस्याएँ है। जो इस तरह के इतिहास लेखन को सूक्ष्मता की ओर अपरिहार्थ रूप से ढकेलती है। मानसिकताओं तथा सामान्य जन की रोजमर्रा की जिन्दगी एवं उनके तनावों को समझने के लिए इतिहास को स्वभावतः सूक्ष्म संदर्भ ही अपनाना पड़ता है; किसी एक शहर या बस्ती, यहाँ तक कि कुछ भूले हुए व्यक्तियों के अंतरतम विचारों एवं उनकी निजी अथवा सार्वजनिक जीवन की विलक्षणताओं को बारीकी से समझने की चेष्टा करनी होती है। ऐसे में इतिहास लेखन को सूक्ष्मता एवं व्यापकता एक साथ प्रदान करना वास्तव में मुश्किल कार्य है।[21]

निष्कर्ष

इस प्रकार सामाजिक इतिहास लेखन की अपनी कुछ समस्याएं होती है और समाज का इतिहास लिखना जहाँ रोचक होता है वही चुनौतिपूर्ण भी होता है क्योंकि इसके लिए हमें समाज का सूक्ष्म अध्ययन करना होता है। समाज में चलने वाली निरन्तरता और परिवर्तन मन्दगति से होते है और सामाजिक परिवर्तनों की गति तो इतनी मन्द और अगोचर होती है जैसे भूमिगत जल स्त्रोत ! जिसके कारण सूक्ष्म लेखन कठिन कार्य हो जाता है। सामाजिक इतिहास को हम समाज शास्त्र के माध्यम से भी समझ सकते है। क्योंकि सामाजिक विकास और निरन्तरता व परिवर्तन का अध्ययन सबसे अधिक समाजशास्त्रीयों ने ही किया है।

उपरोक्त वर्णन से यह कहा जा सकता हैं कि इतिहासकारों के निरंतर प्रयासों के कारण ही आज इतिहास में सामाजिक इतिहास लेखन की विधा अपना सही स्थान प्राप्त करती जा रही है। आज हम देखे तो सामाजिक इतिहास इतिहासकारों, शोधकर्ताओं द्वारा सबसे अधिक पसन्द किया जा रहा है, क्योंकि जिस समाज की हम बात कर रहे होते है उसी में रहते है और समाज के बारे में जानना और लिखना एक उत्साहपूर्ण कार्य है। इस प्रकार सामाजिक इतिहास की धारा आज अपनी सही दिशा की तरफ अग्रसर हो रही है और सामाजिक इतिहास लेखन की दशा में पहले के मुकाबले सुधार हो रहा है और साथ में ही इस का क्षेत्र विस्तरित होता जा रहा है।

पादटिप्पणी–

[1] सरकार, सुमित; आधुनिक भारत (1885–1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ० 26
[2] श्रीधरन, ई०; इतिहास–लेख : एक पाठ्यपुस्तक, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011, पृ० 231
[3] शुक्ल, रामलखन; आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2014, पृ० 39
[4] शरण, राधे; इतिहास और इतिहास लेखन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, मध्यप्रदेश, पृ० 423
[5] हॉब्सवाम, एरिक; इतिहासकार की चिंता, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 2007, पृ० 95
[6] विजय, देवेश; सांस्कृतिक इतिहास : एक तुलनात्मक सर्वेक्षण, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2009, पृ० 338
[7] शरण, राधे; पूर्वोक्त, पृ० 422
[8] शुक्ल, रामलखन; पूर्वोक्त, पृ० 40
[9] वही, पृ० 40
[10] शरण, राधे; पूर्वोक्त, पृ० 422
[11] विजय, देवेश; पूर्वोक्त, पृ० 339
[12] शरण, राधे; पूर्वोक्त, पृ० 424

[13] Social History Online Encyclopedia, p 1
[14] शरण, राधे; पूर्वोक्त, पृ० 28
[15] श्रीधरन, ई०; पूर्वोक्त, पृ० 213
[16] वही
[17] विजय, देवेश; पूर्वोक्त, पृ० 339
[18] वही, पृ० 341
[19] शुक्ल, रामलखन; पूर्वोक्त, पृ० 42
[20] शरण, राधे; पूर्वोक्त, पृ० 424–425
[21] विजय, देवेश; पूर्वोक्त, पृ० 342